सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुखभाग्भवेत ।।

स्मारिका

वागड़ सेवा सन्देश

वागड़ सेवा संस्थान ट्रस्ट (रजि.)

महात्मा गांधी चिकित्सालय परिसर, धर्मशाला
बांसवाड़ा-327001 (राजस्थान)
दूरभाष : (02962) 246375

मेरी प्रेरणा : वागड़ सेवा संस्थान

(प्रेरणा स्त्रोत एवं स्थापना इतिहास)

-भारतसिंह

वागड़ सेवा संस्थान ट्रस्ट बांसवाड़ा की स्थापना मैंने संस्थापक ट्रस्टी के रूप में इक्यावन ट्रस्टियों के साथ दिनांक 19 सितम्बर 2002 को सब रजिस्ट्रार, बांसवाड़ा के कार्यालय में पंजीकृत करा कर की। इसकी स्थापना की पृष्ठ भूमि एवं इस सेवा कार्य के लिये प्रेरित होने की भावना मेरे अन्तर्मन में तब उत्पन्न हुई जब मैं वर्ष 1998–1999 में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के पद पर उदयपुर में नियुक्त था। उस समय में स्मैक के अभ्यस्त युवकों महिलाओं एवं उनसे सम्बन्धित आपराधिक प्रकरणों के अनुसंधानों के द्वारा सम्पर्क में आया । स्मैक, अफीम का परिष्कृत रूप है। इस नशे के नशेडियों को उनकी भाषा में 'गरदोला' (गुरदुल्ला) कहते हैं । स्मैक के अभ्यस्त लोग अधिकतर समाज के निम्न एवं मध्यमवर्ग के युवक थे । स्मैक को शौकियाना तौर पर दो–तीन बार सेवन करने के पश्चात् ही व्यक्ति उसका अभ्यस्त हो जाता है और इस नशे के लिये इतना बेचैन हो जाता है कि उसे दिन में तीन–चार बार स्मैक लेनी ही पड़ती है, अन्यथा उन्हें बहुत शारीरिक मानसिक पीड़ा होती है । नशे की शुरूआत के दौर में व्यक्ति अपने में बहुत ज्यादा ताकत महसूस करता है परन्तु वह कुछ समय तक ही रहती है, इसके बाद वह नशे की सनक तथा कल्पना में ही विचरण करता है । नशे की लत इतनी अधिक हो जाती है कि उसे नशे के अलावा दुनियां के सभी रिश्तों व सामाजिक मानदण्डों की उसके सामने कोई अहमियत ही नहीं रहती । मैंने कुछ लोगों की आप बीती की जानकारी ली तो मुझे समझदार व्यक्ति भी नशे के लिये रूपया जुटाने के लिये अपनी बहन–बेटी–पत्नी की इज्जत बेचने के लिये हमेशा ग्राहक ढूंढते नजर आये और इससे भी नशे के लिए रूपयों के कम पड़ने पर वे चोरियां करते। स्मैक/अफीम नहीं मिलने पर वे गले एवं हाथ की खून प्रवाह नस को काटकर आत्म हत्या अथवा खून के बहने से शरीर में होने वाली पीड़ा को कम करने के प्रयास करते हैं । उदयपुर में जिन मोहल्लों में यह लत युवकों में बढ़ रही थी उन मोहल्लों में जाकर मैंने सार्वजनिक तौर पर इसके बारे में बताया और स्मैक के आदी युवकों को अस्पताल में भर्ती करवाया तथा लत छुड़ाने के लिये विशेष शिविर भी लगवाऐ । स्मैक के अभ्यस्त लोग प्रथम बार इसका सेवन यौन क्रीड़ा में आनन्द प्राप्त करने के लिये करते हैं। शनैः शनैः अभ्यस्त होने के बाद उनका यौन आनन्द तो समाप्त हो जाता है, मात्र नशे का मजा ही रह जाता है । ये व्यक्ति नशे का अभ्यास 'गरदोला' अपनी रिश्तेदारी एवं मित्रों को यौन क्रीड़ा में आनन्द प्राप्त करने के बहाने से शामिल कर अपने "समाज" की संख्या बढ़ाने में लगे रहते हैं, ताकि नशे के मिलने के स्त्रोत अधिक हों । कुछ समय तक अफीम/स्मैक के नशे से यौन क्रीड़ा के समय में बढ़ोतरी होने तथा आनन्द के लिये इसके दुष्परिणामों से अनभिज्ञ महिलाएं भी युवकों को इस नशे के लिये प्रेरित करती हैं ।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बांसवाड़ा के पदस्थापन के समय से मुझे पाटीदार, वागड़िया एवं हाटखरा समाज से अफीम की लत की जानकारी बच्चे के जन्म, सगाई, विवाह, मृत्यु, कारज, पगड़ी रस्म, कलाजी महाराज के देवरी पर आकड़ी छोडने, मेहमान नवाजी के अवसर पर अफीम के इत्यादि लेने की। तब मैंने तीनों पाटीदार समाज के सोलह चौखरों में गांव–गांव जाकर उनकी बैठकें बांसवाड़ा एवं विभिन्न गांवों में कीं । प्रत्येक चौखरे के गांवों की सामूहिक बैठके कीं । कलाजी बावजी के मंदिर सागड़ोद, पड़ोली राठौड़, बोडीगामा पर जाकर कलाजी बावजी से सार्वजनिक तौर पर अफीम के चढ़ावे के औचित्य पर अर्ज गुहार कर कलाजी बावजी के पुजारियों के मार्फत यह संदेश दिया कि कलाजी बावजी चढ़ावे के तौर पर अफीम का कसुम्बा से ही प्रसन्न नहीं होते उनकी आराधना जल, नारियल एवं केसर से भी होते हैं । अफीम की लत वालों ने कलाजी से जोड़कर उत्पन्न अंध विश्वासों का सहारा लेकर इस लत के कारण प्रचलित हुई कुरीति से पाटीदार समाज के साथ ही साथ आम व्यक्ति पर भी बहुत बड़ा आर्थिक भार पड़ रहा था, क्योंकि सामाजिक रस्म के अनुसार उनको यह सब मजबूरी में करना पड़ता रहा था । समाज के मुखिया एवं पंचों से इसे बंद करने के लिये एक वर्ष तक लम्बी वार्ताएं होती रही अंत में सामाजिक तौर पर मुखियाओं एवं पंचों के जरिये अफीम के चलन को प्रतिबंधित कराया । अफीम लेने वाला काका अपने भतीजे को अफीम लेने की सलाह देता है जिससे खेत में कार्य करने की उसकी क्षमता बढ़े मेहनत की क्षमता बढ़े, यह बात कहकर भी अफीम का मावा दिया करते थे कि जब–जब भी कार्य का बोझ बढ़ता है तब–तब अफीम का 'मावा' लेकर अधिक श्रम का कार्य किया जा सकता। अफीम के मावा लेने से यौन क्रिया में महिलाओं को भी आनन्द आने से उन्होंने भी इसे बुराई नही मान कर परोक्ष रूप से इस नशे को प्रोत्साहित किया। जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक थी घर में कई कमाने वाले थे उनको तो यह नशा निभ गया परन्तु सीमित आय वालों की जमीनें बिकने लगीं व शादी–विवाह के रिश्ते भी अफीम की वजह से टूटने लगे । अफीम की लत ने बेमेल जोड़ों के विवाह भी करा दिये । अफीम के आदी लोगों को बुढ़ापे में सबसे ज्यादा तकलीफ होती है क्योंकि स्वयं आमदनी करने के लायक नहीं होते इस कारण परिवारजनों द्वारा अफीम की आपुर्ति करनी होती है । जिन घरों में दूसरी पीढ़ी अफीम लेने वाली नहीं होती उन्हें इस नशे

की वजह से काफी, मानसिक एवं शारीरिक तकलीफें उठानी पड़ती है । मैंने अफीम/स्मैक से परिवार पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की विशेष रूप से अफीम लेने के आदी लोगों के परिवारों को समझाया और आने वाली पीढ़ी को इससे मुक्त रखने का आवाहन किया। मेरी एक वर्ष की इस अफीम विरोधी मुहिम से सामाजिक चेतना आई जिससे अफीम का सेवन समाज में प्रतिबंधित हुआ । इसमे महिलाएं अधिक प्रसन्न थीं । इस मिशन में मेरे पाटीदार, लेऊभा, वागड़िया एवं हाटखरा से बहुत ज्यादा व्यक्तिगत एवं आत्मीय सम्बन्ध हो गये । अफीम को सामाजिक तौर पर प्रतिबंधित कराने में पाटीदार जागृति मण्डल, ताजेंग भाई नौगामा, रणछोड़ भाई, लालजी, वकील साहब, करजी, खेमजी भाई करजी, खुमानसिंह बडोदिया, कल्याणसिंह छींछ, गौतम भाई मुखिया सियापुर, कचरा भाई हाटखरा प्रतापुर, नाथुभाई मुखिया पालोदा, दलजी पटेल डडूका, महिपालजी बोर, महिपालजी लोकिया, गोकुल भाई करजी, गौकलनाथजी आसन, गजेन्द्र पाटीदार खोडन, जीवन भाई, खुमानसिंह छींछ, कैलाश पाटीदार जौलाना, केशवलाल आसोड़ा, पेमजी ओडा, रणछौड़ चौखला, श्रीधरजी जोशी, सेवानिवृत्त उपअधीक्षक पुलिस, बोदला महाराज, बालुरामजी, मोगजी भाई मुंगाणा, नाथूभाई उदयपुरा, गमेरचन्दजी वकील साहब, कुरिया भाई, परथेंगभाई बड़गांव, गौतम भाई घाटोल, ताजेंग भाई बड़ाना, पेमजी भाई चोकड़ी ने मुझे विशेष सहयोग किया । इसका सुपरिणाम यह हुआ कि जो समाज अफीम के सेवन पर प्रतिवर्ष लगभग एक करोड़ रूपया निरर्थक व्यय करता था वह बन्द हो गया और वह पैसा उनके विकास पर खर्च होने लगा जिससे वे लोग प्रगति की राह पर हैं । दिनांक 5 अप्रेल 2002 को महात्मा गांधी राजकीय चिकित्सालय, बांसवाड़ा नर्सिंग ट्रेनिंग स्कूल के हॉल में अस्पताल की सफाई के बाद अस्पताल एवं शहर के विकास की गोष्ठी हुई, उसमें मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बांसवाडा का कार्यालय किराये के भवन से धर्मशाला में स्थानान्तरित करने का प्रस्ताव जो करीब—करीब तय हो चुका था उसमें मैंने तत्कालीन जिला कलक्टर श्री राजीवसिंह को धर्मशाला में कार्यालय स्थानान्तरित नहीं करने एवं धर्मशाला की मरम्मत कराके आम लोगों के लिये ठहरने की सुविधा प्रदान करने का आग्रह किया जिस पर बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने इस कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारी मुझे चुनौती स्वरूप सोंपी इस उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य को मैंने लेऊजा, वागडिया, हाटाखरा पाटीदारों के बलबूते पर धर्मशाला के संचालन के लिये एक ट्रस्ट बनाकर गांवों से आने वाले रोगियों के परिजनों को नि:शुल्क भोजन, तेल, साबुन एवं ठहरने की व्यवस्था करने के लिये जिम्मेदारी स्वीकार की । पाटीदार समाज के सोलह चौखरे वालों ने मेरे इस चुनौती पूर्ण मानव सेवा के कार्य को स्वीकार करने पर ट्रस्ट के गठन में पूरी—पूरी मदद की तथा ग्यारह—ग्यारह हजार रूपये स्थाई फण्ड में देकर संस्थान के मानव सेवा कार्य के लिये वर्तमान में लुप्त हो चुकी परम्परा हुकड़ी प्रथा लागू करने के चौखरों में निर्णय लिये। इसी से प्रेरित होकर मैंने शहर के संभ्रान्त लोगों को इस मानव सेवा के कार्य के लिये उत्साहित कर ट्रस्टी बनाये। आज ट्रस्ट के 134 ट्रस्टी है और भगवद कृपा से यह संख्या दिन दूनी बढ़ती जा रही हैं। हर जाति, धर्म, क्षेत्र और वर्ग के लोग इसके ट्रस्टी हैं ।

श्री मेहता परिवार के सदस्य प्रो. एन. के. मेहता, देवीलालजी, श्री जयनारायणजी, श्री प्रवीण मेहता ने श्री लूणजी मगनजी की स्मृति में लाईफ लाईन दवाघर में पांच लाख रूपये की राशि का दान दिया जिससे प्रमुख चिकित्सा अधिकारी के कक्ष के पास लाईफ लाईन दवाघर प्रारम्भ किया जिससे थोक मूल्य पर सभी प्रकार की जीवनरक्षक दवाईयां उपलब्ध कराई जा रही हैं । राजस्थान में राज्य सरकार की लाईफ लाईन दवाघर योजना के अन्तर्गत बांसवाड़ा की लाईफ लाईन का लाभ आम लोगों को मिल रहा है, उसकी मिसाल दूसरी नहीं मिलेगी, क्योंकि बाजार में कुछ दवायें कई गुना दामों पर मिलने से गरीब व्यक्ति दवा खर्च वहन नहीं कर पाते । श्रीलाल जानी परिवार की धर्मशाला निर्माण में दानराशि भी महत्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय है।

वागड़ सेवा संस्थान मूक वधिन एवं मन्द बुद्धि बच्चों के छात्रावास को कालिका माता (भोजापालिया)में संचालित कर रहा है । संस्थान प्रयासरत है कि छात्रावास के लिए अच्छा भवन सरकार की मदद से उपलब्ध हो जाये। संस्थान ने वागड़ कृषक सहकारी समिति की स्थापना, कृषि उपजमण्डी में कृषकों के लाभ के लिए पंजीकृत कराई है जो काश्तकारों को कृषि उपज का उचित बाजार मूल्य दिलाने में सहयोग करने के लिये प्रयासरत है ।

संस्थान अभी निर्धन व्यक्तियों के शव उनके निवास स्थान तक पहुंचाने, शवों के अंतिम संस्कार की व्यवस्था के साथ—साथ निर्धन बीमारों को अस्पताल से रेफर करने पर अहमदाबाद एवं उदयपुर के सरकारी अस्पताल तक एम्बुलेन्स से पहुंचाने का कार्य भी कर रहा है । संस्थान भविष्य में पोलियो के रोगियों के ऑपरेशन तथा बच्चों, वृद्धों एवं महिलाओं की विशेष बीमारियों को दूर करने के लिये विशेष शिविर लगाने पर भी विचार कर रहा हैं । अंत में, मैं उन सभी दानदाताओं का आभारी हूं जिनके सहयोग से मैं यह समाज सेवा का कार्य कर पा रहा हूं ।

संस्थापक एवं प्रबन्ध ट्रस्टी, वागड़ सेवा संस्थान
—नांदली—अहाड़ा, डूंगरपुर

देवपूजा दया दान दाक्षिण्य, दम और दक्षता — ये छ:दकार जिसके पास हों, वह व्यक्ति देवता का अंश कहा गया है ।

WAGAD SEVA SANSTHAN TRUST, REG. NO. IV/350/56, Dated 19.9.2002

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुखभाग्भवेत ।।

SOVENIR
WAGAD SEVA SANDESH

WAGAD SEVA SANSTHAN TRUST (REGD.)

DHARMSHALA, MAHATMA GANDHI HOSPITAL

BANSWARA-327001 (RAJ.)

Ph. (02962) 246375

Burhani Golden Offset Printers, Banswara Ph. (02962) 243447